रिकॉर्डः– सुन तो लो मेरा अफसाना.....

ॐशांति। भगवानुवाच्य गोप और गोपिकाओं प्रति अर्थात् अपने लाडले बच्चों प्रति। अब यह तो दुनिया भी जानती है कि एक है रचयिता (क्रियेटर), जैसे मनुष्य बाप को क्रियेटर कहा जाता है; क्योंकि स्त्री, बच्चे आदि सब उनकी रचना(क्रियेशन) हो गई। अब रचना को रचयिता तो नहीं कहेंगे। यह समझने की बात है। अब भगवान है इस मनुष्य सृष्टि का रचयिता। ऐसा नहीं कहा जावेगा कि यह हर एक मनुष्य भगवान है। कहेंगे, यह सब भगवान की रचना अर्थात् बच्चे हैं। जो भी जीव(मनुष्य) की आत्माएँ हैं उनका बाप है पारलौकिक परमपिता **P.**। वह है ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर, प्रेम का सागर। सारी सृष्टि का पारलौकिक परमप्रिय **P.** है, परे ते परे रहने वाला है। उनको कहा जाता है ऊँचे ते ऊँचा भगवत। अगर **P.** सर्वव्यापी कहें तो फिर सब ऊँचे ते ऊँचा हो जाय, फिर दुःखी क्यों? सतयुग में पहले तो सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी अहिंसा मर्यादा पुरुषोत्तम देवताओं का धर्म था। वह है **P.** की दैवी रचना। बाप बच्चों को कब भी दुःख के लिए नहीं रचते हैं। वह तो रचते ही हैं सुख के लिए। उस दैवी दुनिया को कहा जाता है सचखण्ड। अब भारत कूड़ खण्ड बन गया है। यह भारत ही सतयुग अर्थात् सचखण्ड था। भगवान ने सचखण्ड की रचना रची। जितना खुद प्यारे ते प्यारा है उतनी ही अति प्यारी सृष्टि रची। देवताएँ बहुत प्रिय हैं। श्री कृष्ण को कितना झुलाते हैं। अब उनको ढकेल दिया है द्वापर में। राम–सीता का बचपन तो दिखाते नहीं। लक्ष्मी–नारायण को सतयुग में दिखाते हैं। अब प्रश्न है कि लक्ष्मी–नारायण को किसने रचा? वह दैवी सृष्टि किसने और कब रची? भगवान बैठ समझाते हैं कि वह दैवी सृष्टि ..... पर ही रची होगी। सतयुग में है दैवी सृष्टि, कलियुग में है आसुरी सृष्टि। अब तुम जानते हो परमपिता **P.** तुमको सम्पूर्ण सुख–शांति–पवित्रता का वर्सा दे रहे हैं। तुम्हारा तमोगुणी जीवन को बदल कर सतोगुणी जीवन बना रहे हैं। माया पर विजय पहना कर मनुष्य से देवता बना रहे हैं।

यह हो गया मानसरोवर। परमपिता **P.** साधारण तन में आकर ज्ञान अमृत पिलाते हैं। इस ज्ञान सरोवर में ज्ञान स्नान करने से मूत पलीती आत्माएँ और शरीर दोनों प्योर हो जाते हैं। यह नई दुनिया नए भारत के लिए नया ज्ञान है, जो नए परमपिता **P.** द्वारा मिलता है। अब तुम उनके पास आए हो। यह है तमोप्रधान आसुरी दुनिया। 5 विकार मनुष्य को असुर बना देते हैं। तब **P.** आकर फिर मनुष्य से देवता बनाते हैं। तुमको मोस्ट लवली बनाते हैं इस अविनाशी ज्ञान से। तुम अब विख को छोड़ अमृत पीती हो सतोप्रधान देवता बनने लिए। अमृत पीने वाले फिर विख नहीं खा सकते। अगर विख खा लिया तो फिर ज्ञान सारा निकल जावेगा, बेताले बन जावेंगे। इसलिए बाबा सावधान करते रहते हैं। मलेच्छ से स्वच्छ बनना है। तुम सबका यह अन्तिम शरीर है। जैसे पुराने घर में टोर डालते हैं ना। **P.** भी अब नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। तो अब पवित्र ज़रूर बनना पड़ेगा। वह सदा

शिव है ही सबको महान पवित्र, महान सुखी बनाने वाला। तो रचयिता वह एक हो गया। बाकी रचना को रचयिता समझना, यह है इन सन्यासियों का मिथ्या ज्ञान। परमपिता P॰ से सबको बेमुख कर देते हैं। P॰ को ही 84 लाख (यो)नियों में ले गए हैं। इनको कहा जाता है धर्म ग्लानि। इन्होंने ही भारत को दुब्बण में फँसा दिया है। एक ही बात में सारी दुनिया निर्धणकी बन गई है। वह कैसी बात? ईश्वर सर्वव्यापी है, और फिर सन्यासी कहते शिवोहम्, ब्रह्मोहम्। उन्हों को कहा जाता है निर्धणके। धणी नहीं है तो दुःख उठाते रहते हैं। देवताओं के लिए भी गाली देते रहते हैं कि वह दै(त्य) थे, रावण थे। अरे, वहाँ सतोप्रधान दुनिया में डेविल्स कैसे हो सकते! कितने कलंक लगा दिए हैं। सारा उल्टा ज्ञान देते रहते। P॰ कहते तुम सब आत्माएँ भाई–2 हैं और सन्यासी कहते हम सब बाप हैं। ऑरफन्स बन पड़े हैं। यह ऑरफन्स किसने बनाया? इन विद्वानों ने। ऐसे झूठा ज्ञान देने वाले विद्वानों–सन्यासियों के अनेक फॉलोअर बन गए हैं। फॉलोअर का भी अर्थ नहीं समझते। शिवानंद का फॉलोअर हो तो तुम सन्यासी कपड़ा पहन उनके साथ बैठो। वह सन्यासी और तुम गृहस्थी टट्टू तो फॉलोअर कैसे ठहरे! इतनी बड़ी–2 बुद्धि वाले भी कुछ समझते नहीं। माया ने बुद्धि को ताला लगा दिया है। यह सब राज़ अब परमपिता P॰ समझा रहे हैं। कहते हैं– बच्चे, अब मैं आया हूँ, मेरे पास सुख–शांति–आनंद सब है, मैं ज्ञान का सागर हूँ, तुमको 21 जन्मों लिए वर्सा देता हूँ। कितना लवली बाप है। एकदम तमोप्रधान मनुष्य को ज्ञान अमृत से बदल सतोप्रधान देवता बनाते हैं। मनुष्य ते देवता किये न करतन लागे वार। किसको? P॰ को देरी नहीं लगती है। सर्वदा सुखी बना देते हैं। भारत कितना सुखी था, घी की नदियाँ बहती थीं, भारत बहुत मालामाल था जब श्री लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। वह राज्य किसने स्थापन किया? भगवान ने। कब? संगमयुग पर। अब संगम है ना। विनाश सामने खड़ा है। अब तुम आए हो ज्ञानेश्वर P॰ द्वारा ज्ञान प्राप्त कर राजाओं का राजा बनने। तो इनके गोद में आने सिवाय वर्सा कैसे मिलेगा? बाबा कहते हैं मेरी गोद में आओ तो पापात्मा से पुण्य आत्मा बनाऊँ। कलियुग में हैं ही पापात्माएँ। सतयुग में हैं पुण्य आत्माएँ। बनाने वाला सिर्फ एक ही P॰ है, वह है मोस्ट लवली तब तो उनको याद करते हैं। मोस्ट लवली बनाते हैं, मोहताज से सिरताज बनाकर दुःखधाम से सुखधाम में ले जाते हैं। बाबा इतना पवित्र बनाते, माया फिर गन्दा बना देती है। इसलिए इनको युद्धस्थल कहा जाता है। जो इन 5 भूतों पर विजय पावेंगे वो ही राजधानी के मालिक बनेंगे। कितना सहज है। बाबा की याद तो बहुत सहज है, जैसे लौकिक बाप की याद बुद्धि में रहती है। आत्मा का धर्म ही है शांत। बाकी चाहिए राजधानी। इनके लिए है यह गॉडली नॉलेज। ऐसी पढ़ाई तो रोज़ पढ़नी चाहिए ना, नहीं तो धारणा नहीं होगी, न और को धारण करा सकेंगे। यह कोई ऑर्डिनरी सतसंग नहीं, यह ज्ञान न कोई शास्त्र में है, न कोई विद्वान आदि दे सकेंगे। यह नॉलेज उस नॉलेजफुल P॰ से ही मिलती, वो ही ज्ञान सागर है। वर्ल्ड

ऑलमाइटी अथॉरिटी है। सारे ब्रह्माण्ड और सृष्टि को जानने वाला। और कोई भी मनुष्य आत्मा को वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी, ज्ञान का सागर, शांति का सागर कब नहीं कहेंगे। वह तो एक ही P॰ है। उस P॰ द्वारा तुम अब मोस्ट लवली बन रहे हो।

बच्चे, यह ज्ञान रोज़ अमृतवेले ज़रूर सुनना है; क्योंकि यह है सतोप्रधान समय। तो इस समय ज्ञान अमृत ज़रूर पीना है। देखो, परमपिता P॰ कितना दूर से आते हैं पढ़ाने लिए। ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट बनकर आते हैं पढ़ाने। तुमको इतना कदर नहीं है बाप का। 8/10 माइल से आना कोई बड़ी बात नहीं। बहुत भारी कमाई होती है। बाबा है सौदागर। तुम तो बच्चे हो ना। तुम्हारा सो हमारा, हमारा सो तुम्हारा। यह है फैमली ज्ञान। नॉलेज को धारण कर सच्चा ब्राह्मण व्यास बनना है और रेग्युलर पढ़ना है। नहीं तो बाबा समझते हैं बच्चों को बाबा का रिगार्ड नहीं है। च(ल)न से मालूम पड़ता है कि कितना वर्सा लेने के हकदार बन सकते हैं। वो बाबा है अंतर्यामी और यह है बहरयामी। अविनाशी ज्ञान धन का धंधा कोई विरला करते हैं। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि विनाशी धंधा छोड़ो। नहीं। बाबा कहते हैं वह धंधा तो अनेक जन्मों से करते आए हो, अब यह भी करो, यह धन माल तो सब विनाश होना है। कोई बहुत साहुकार है, समझे हम अपने बच्चे के लिए धन रखें; परन्तु बच्चा सुख पा नहीं सकेंगे। तुम्हारा दीवा जगाने वाला भी कोई नहीं रहेगा। सब मरने वाले हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। बच्चे को समझाना है कि अब परमपिता P॰ से वर्सा लेना है। हमारा वर्सा लेने के तुम हकदार बन नहीं सकेंगे। अब तो विनाश होना है, सबको मरना है। P॰ कहते हैं मैं कालों का काल हूँ। जो भी सब आत्माएँ हैं उन सबका मैं पिण्डा हूँ। सबको वापिस ले जाऊँगा। इसलिए बाबा राय देता है अब अविनाशी धन कट्ठा करो, विनाशी के पिछाड़ी मत पड़ो। तुम बाबा के गोद में आ जाओ, तुम्हारे बच्चों की सम्भाल बाबा करेंगे। भूख थोड़े ही मरेंगे। तुम बोट में बैठ जाओ। उस पार जाना है तो बैठो। फिर भी कहते हैं फलाणे को कौन सम्भालेंगे? बाबा कहते हैं बोट तैयार है, लंगर उठाया हुआ है सिर्फ पैसेंजर्स उठाना है। तो कहते बच्चे को पढ़ाना है। अरे, यह गवर्मेन्ट ही खलास होनी है तो फिर गवर्मेन्ट के क्या नौकरी कर सकेंगे। अब पाण्डव गवर्मेन्ट जिंदाबाद होनी है, कौरव गवर्मेन्ट मुर्दाबाद होनी है।

प्रभु की लीला अब है। मनुष्यों अथवा देवताओं की लीला होती नहीं। लीला है प्रभु की जो इस समय पार्ट बजाते हैं स्थापना, विनाश, पालना का। यह ईश्वरी(य) चरित्र है। P॰ है ही गरीब निवाज़। तुम बच्चों के अच्छे कर्म किए हुए हैं जो गरीब पास जन्म हुआ है। जिनका साहुकार पास जन्म हुआ है उन्हों के बुरे कर्म किए हुए हैं। तब तो देखो ज्ञान नहीं ले सकते। माया के सुख का अहंकार है। बाबा कहते हैं 100% बेगर ही 100% प्रिन्स बनेंगे। वर्सा लेना है तो भोलानाथ शिव को पहले बालक बनाना पड़ेगा। तुम मुझे एक जन्म के लिए वर्सा दो, मैं 21 जन्मों के लिए तुमको मालामाल करूँगा। यह गुप्त राज़ कोई समझे! अच्छा, चलो।

ॐशांति।